दासानुदास

आषाढ़ सुदी बारस

बात कुछ अटपटी-सी है। लोग कहते हैं देवता सो गये। देव सो गये और देव जागेंगे यह क्या बात है। देव सोया हुआ है, बलदेव जागा हुआ है। कल एकादशी (आषाढ़ सुदी) बीत गई, देवता सब सो गये और आज बारस के दिन शरीर धारण करने वाला बलदेव भी सो गया। देवता उठेंगे देवोत्थान एकादशी के दिन कार्त्तिक के महिने में और यह देव बलदेव तो जागा हुआ है। यह शरीर सोया हुआ है लेकिन देवता जागा हुआ है। उसे देना है, बल देना है, मानसिक बल देना है। शारीरिक बल तो मनुष्य किसी-न-किसी प्रकार से प्राप्त कर लेता है लेकिन मानसिक बल के लिये तो कुछ ऐसे बलशाली की आवश्यकता होती है जिसने कि मानसिक बल के आधार पर ही बहुत कुछ किया और दिया।

बलदेव ने क्या किया। बलदेव ने वही किया जो बहुत नहीं कर पाये। फिर प्रश्न हो सकता है कि ऐसा उसने क्या किया जो बहुत नहीं कर पाये? बात यह है – लोगों ने धूनि रमाई, उसने अपना दिल रमाया। धूनि रमाने वाले तो बहुत मिलते हैं लेकिन धुन का पागल विचारों का पागल, अपने आपको खो बैठने वाला पागल बहुत कम, बहुत कम। यदा कदा ऐसे भी प्रभु के प्यारे आते हैं जो केवल अपनी धुन के कारण आप लोगों के सम्मुख कुछ कहने के लिये आये।

जिस सन्त की कथा आज हम आपको सुना रहे हैं आप लोगों में से अधिकांश व्यक्ति कुछ-न-कुछ आंशिक रूप से जानते हैं लेकिन आज फिर

उस कथा को हमें दोहराना है। इसलिये दोहराना है क्योंकि बहुत से लोग नहीं जानते। लोगों ने सिर्फ यही समझ रखा है कि कोई थे जिसे कोई मानता है। लेकिन कोई था, कैसा था, कैसे बन गया वह, यह भी तो जानना होगा। इसी जानकारी के लिये ही बीच-बीच में कुछ बातें कहनी पड़ती हैं।

प्रारम्भ होता है – जन्म स्थान है नरड़, जो राजस्थान में है। नरड़ में वह नर आया जिसने नरत्व का भाव अन्तिम समय के पूर्व ही छोड़ दिया। यथार्थ में नर शब्द जो है उसको उलट कर पढ़ने से रण होता है। मनुष्य अपने विचारों के रण से कभी मुक्त नहीं हो पाता जब तक कि वह नारायण को नहीं मानता। नरड़ में जन्म लेने वाला नर प्रभु की कृपा से बल प्राप्त करते-करते एक दिन वह देव नहीं, बलदेव – बल देने वाला देवता हो गया। केवल नाम बलदेव नहीं है। केवल नाम ही होता बलदेव, तो बहुत से बलदेव हैं लेकिन उसे कुछ ऐसा भाव मिला, उसने कुछ ऐसी अनुभूति प्राप्त की, कि अपने बच्चों के लिये बड़ा सरल मार्ग, बड़ा आनन्द का मार्ग प्रशस्त किया। एक ऐसा मार्ग प्रशस्त किया जिसमें मार नहीं – रग-रग में वह है। मन्थन नहीं, हठ योग नहीं, कर्म योग नहीं, एक ऐसा भाव योग, जिस भाव के लिये, मैं क्या कहूँ – दुनिया तरसती है। यह भाव ही था कि कृष्ण का नाम सुन कर राधा पागल होती थी और यह भी एक भाव था जिसने कि गोपाल के नाम स्मरण मात्र से मीरा को पागल कर दिया और यह भी एक भाव था जिसे पाकर के तुलसीदास को कहना यह पड़ा "सियाराम मय सब जग जानी, कर हूँ प्रणाम जोरि जुग पानी"। तो क्या यह ऐसे ही हो गया, नहीं। बिना उस प्रभु की कृपा के कोई भी वस्तु, कोई भी भाव प्राप्त नहीं होता।

फल मिलता है पेड़ से, और पेड़ खड़ा है मूल पर, जड़ पर। जिसके जड़ में भगवान का भाव नहीं वह पेड़ ठहरेगा कैसे? उसने (बाबा) कौन-सी

जड़ पकड़ी थी, उसने कौन-सी चीज पकड़ी थी। प्रारम्भ करता है जीवन एक महन्त के पद से। जब वह महन्त पद ही मन की शान्ति न दे सका बलदेव को, तो बलदेव ने क्या किया? महन्त पद को छोड़ा, महान को पकड़ा। साधारण मनुष्य जो होता है वह क्या करता है कि दुनिया का पद मिला नहीं कि प्रभु का पद भूल बैठा। बाबा ने देखा कि यह महन्त पद तो केवल लोगों को प्रसन्न करने के लिये है, मुझे तो अपने प्रभु को प्रसन्न करना है। इसीलिये कार्त्तिक की अमावस्या लक्ष्मी पूजन के पश्चात उस धन को जो अब तक संग्रहित किया था, पैरों से कूचल कर निकल पड़ा बलदेव बल प्राप्त करने के लिये, मानसिक बल प्राप्त करने के लिये। बढ़ा आगे, पहुँचा तोसाम की पहाड़ियों पर। उन पहाड़ियों ने – जो कि पहाड़ है, पत्थर है – देखा कि यह भी पथ पर दृढ़ है। ऐसा भी समय आया कि जब खाने को भिक्षाटन करने के पश्चात भी कुछ न मिला तो बलदेव ने अपने भाव नहीं छोड़े – सूखी पत्तियाँ चबायी।

इस युग में सत्य को प्राप्त करने के लिये कौन सूखी पत्तियाँ चबायेगा जब कि लोग माल चबाने के फेर में हैं। न जाने उसके क्या धुन थी, कैसा वह पागल था। वह एक ऐसा पागल था कि भूखा रहा, प्यासा रहा लेकिन अपने प्रभु के पद को नहीं छोड़ा। क्यों छोड़ता? यदि वह छोड़ता तो उसकी आज यह अवस्था न होती। यह आज आप लोगों को आह्वाहन करने का अवसर नहीं मिलता। न मुझे मिलता न उसे मिलता। उसने वे पद पकड़े जो अज्ञात थे, उसने वह भाव पकड़ा जो अब तक दुनिया को मालूम न था। उसने वह रास्ता पकड़ा जिस रास्ते में केवल रस-ही-रस था। दुनिया का ह्रास, विलास इत्यादि कुछ न था। प्राणों की आहुति दी उसने। ऐसे ही कोई चीज नहीं मिली।

वस्तु को प्राप्त करने के लिये मनुष्य को क्या-क्या नहीं करना पड़ता। जब वस्तु को प्राप्त करने के लिये मनुष्य को बहुत कुछ कष्ट उठाना पड़ता है, तो प्रभु को प्राप्त करने के लिये कितना कष्ट उठाना पड़ेगा इसकी कल्पना वह मनुष्य नहीं कर सकता जो उस पथ पर न चला हो। लोगों ने समझ रखा है एक सीधा सा रास्ता है। हाथ में एक माला ले लो, सामने तस्वीर रख दो, चन्दन चिरच दो बस। अरे भई यह तो प्रारम्भ है। यह तो वर्णमाला है। यह तो अक्षरज्ञान है। यथार्थ में यही इति श्री नहीं है। इसके लिये तो बहुत दूर पहुँचना पड़ता है। बलदेव लौट पड़े भीतर की आवाज सुनकर, जिसे लोग आकाशवाणी कहते हैं। बल लेकर लौट पड़े और आये वापस उसी स्थान पर, उसी मलसीसर में जहाँ एक गूंगेजी की मण्डी है और लग गये अपनी ध्यान पूजा में। आये गुरु। स्वप्न के आधार पर दिया ज्ञान, लेकिन इतना ही ज्ञान नहीं कि गुरु ने जो दिया वही समझ में आया बल्कि अपना विशेष अनुभव अपना विशेष ज्ञान कुछ ऐसा था उनका कि जो गुरु के पास भी नहीं था। अब आप यह कहेंगे कि यह क्या तमाशा है जो गुरु के पास नहीं था वह ज्ञान? यही तो बात है। अरे भाई अपना तो है ही और गुरु का भी मिल गया, फिर यह डबल ज्ञान हो गया। यदि कोई किसी को रास्ता बतलाये और उस रास्ते के साथ उसकी भी कुछ अनुभूति हो, उसके भीतर भी कोई भावना हो तो इस तरह से डबल ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

प्रारम्भ किया "तत् त्वम् असि" वह तू ही है (यह बहुत पुरानी पद्धति है आपने भी पहले सुना होगा) आप यह समझें कि अगर कोई मनुष्य यदि यों कह दे कि "तूँ वही है" तो क्या "तूँ वही हो गया?" नहीं केवल कहने से कुछ नहीं होता। यह ऐसे होता है कि जैसे मूर्त्ति में मन्त्रों के द्वारा

प्राण प्रतिष्ठा की जाती है, वैसे-ही श्रोता के हृदय में भी प्राण प्रतिष्ठा करनी पड़ती है तब जाकर वह कही हुयी बात प्राणों में जाकर असर करती है।

आप सब लोग आज यहाँ उपस्थित हुये हैं और यह सुनने के लिये उत्सुक हैं कि यह व्यक्ति क्या कहना चाहता है। आप यह सुनना चाहते हैं कि मेरा क्या अनुभव है, मैंने क्यों इसे माना आदि बातें। मैंने इसे माना नहीं, मुझे इसने नमा दिया, झुका दिया। मेरे भीतर भी विद्या का बहुत बड़ा अभिमान था, है नहीं। मैंने भी बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़े थे, मैंने भी बहुत कुछ साधना की थी। आज मैं अपनी प्रशंसा और निन्दा के रूप में कुछ नहीं बतलाना चाह रहा हूँ। मेरा तो यही कहना है कि जो कुछ उनसे मुझे प्राप्त हुआ, उसका पहला धन यह है कि उसने मुझे झुका दिया, अपना दास बना लिया। मैं झुकने वाला नहीं, मैं किसी को मानने वाला नहीं लेकिन बली के सामने किसी का बल नहीं चलता। फिर मानसिक बल की तो बात ही क्या?

जो बलदेव है, उस देव के सम्मुख मनुष्य के बल की क्या बिसात। क्या करेगा वह। वह बालि नहीं था वह बली था। बालि अभिमान के कारण मारा गया, और यह अभिमान को मारने वाला बली है बली है बलदेव है। यह तो अभिमान चूर करने वाला है। बालि को तो मारना पड़ा क्योंकि अभिमानी था वह। यह तो अभिमानी का अभिमान पहले झुका देता है ताकि फिर मारना नहीं, मरना नहीं – अमर होना है। यह उसकी विशेषता है, यह उस बलदेव का बल है जो देता है और पता भी नहीं लगने देता। वह मानसिक भावना देता है मनुष्य को और ऐसा परिवर्त्तन भीतर में हो जाता है कि मनुष्य जान नहीं पाता – यह अज्ञात भावना है।

जो लोग गुरु सम्प्रदाय को मानते हैं वे लोग कहा करते हैं कि आपके यहाँ गुरुडम है। हम कहते हैं कि यहाँ न तो गुरु है, न डम है। कोई चीज नहीं। कोई पूछता है क्या आप मन्त्र देते हैं? मंत्र भी नहीं देते। तो आखिर आप क्या करते हैं? तो हम उनसे यही कहते हैं कि हम क्या करते हैं यह हम नहीं जानते। यह हमारे देव से पूछो, बलदेव से पूछो कि वह क्या करता है। हम कुछ नहीं करते। हमारे पास तो कोई विद्या नहीं, बुद्धि नहीं, कोई शक्ति नहीं, भक्ति नहीं, कुछ भी नहीं। अगर कुछ है तो इन्हीं चरणों का प्रताप है।

लोगों को यह मालूम नहीं कि चरणों का प्रताप क्या होता है। लोग जानते नहीं। शिकागो की उस सभा में जब विवेकानन्द जाता है तो वह स्तब्ध खड़ा हो जाता है। यों तो उसने बहुत-सी किताबें पढ़ी थीं लेकिन वह पहली ही उसकी स्पीच (speech) थी, पहला भाषण था। वह नहीं जानता था कि उसे क्या बोलना है। जब वह दो चार मिनट अपनी बुद्धि के बल पर बोल कर थक जाता है तब उसे क्या मालूम होता है – इष्ट खड़ा है। समाधिस्थ सा हो जाता है और फिर बोलना शुरु करता है। अब, अब वह नहीं बोलता, रामकृष्ण परमहंस बोलता है और इसी तरह से मैं कहता हूँ कि मैं नहीं बोलता। बोलने वाला वह है। क्यों बुलवाता है? किस अवस्था में बुलवाता है यह भी नहीं जानता मैं। मुझें कहना तो नहीं चाहिये। यदि ६ दिन की मेरी अवस्था को आप जानें तो मालूम होगा – जिनको मालूम है वे जानते हैं कि अभी तक मेरा स्वास्थ ठीक नहीं है। लेकिन न जाने मैं क्यों बोल रहा हूँ। मुझे पता नहीं क्यों ये भाव आते हैं। ऐसी कोई मैंने भाव की बात भी नहीं कही। मैंने तो सीधी-सीधी बात कही है। जो बल मुझे उसने दिया वह तो मैं दिखला नहीं सकता। मुझमें है भी नहीं शक्ति उसे दिखलाने की क्योंकि बलदेव का बल तो बलदेव ही जाने हम तो उसके दास हैं।

बलदेव 'दास' नहीं, हम बलदेव के दास हैं। हमें क्या मालूम कि वह कैसे देता है, क्या देता है। स्वयं गूंगा और वाणी दी बच्चों को। पिता धन इकट्ठा करता है अपने बच्चों के लिये और यह उदार पिता मौन रहकर के वाणी देता है अपने बच्चों को। कंजूस अपना धन अपने पास रखता है और यह उदार – उधार नहीं देता यों ही देता है, केवल प्रभु के चरणों की भक्ति चाहिये, प्रेम चाहिये।

प्रारम्भ में ही मैंने आपसे कहा था कि देवता सो गये, देव सो गया लेकिन ये सोने वाला देव नहीं है, यह तो सोये हुये को जगानेवाला देव है। हमेशा जगाता है अपनी वाणी से, अपने भाव से, अपने विचार से। अब मैं आप से क्या कहूँ। ग्यारस है, बारस है, तेरस है – इन तीनों तिथियों में रस की भावना है। ये ग्यारस में 'ग्या' है न तो यहाँ से ज्ञान प्राप्त होता है और बारस को वह रस बरसता है जो कि बलदेव ने प्राप्त किया और तेरस को फिर वह तेरा ही हो जाता है। तेरा ही रस और तेरे ही रस को पाकर तेरस। अगर तेरा रस न मिलता तो यह तेरस का दिन देखने को न मिलता।

हम कैसे कहें, कैसे समझायें? लोग तो तिथियों को मानते हैं। हम तिथि को नहीं मानते, हम उस अतिथि को मानते हैं जो अतिथि होकर आया और रह गया – मेहमान नहीं, मेरा भगवान होकर। कैसे भुलाया जाये। मैं नहीं समझता कि किसी मन्दिर में जाकर के इन्सान को भगवान को खोजना पड़ता है। लोग कहते हैं भूत किसी को पकड़ता है; तो मैं कहता हूँ भगवान भी किसी को पकड़ता है। भगवान यदि न पकड़ता तो मीरा पागल होकर के नाचती नहीं। भगवान भी उसी तरह पकड़ता है। लोगों की मान्यता के अनुसार जैसे भूत नचाता है वैसे भगवान भी नचाता है, लेकिन चुन-चुन कर

नचाता है। भूत सब में आता है। किसी में प्रबल क्रोध आता है तो कहते हैं न कि भूत घुस गया कैसे नाच रहा है लेकिन भगवान का भाव कोई-कोई में।

भाव के बिना नाच नहीं सकता, भाव के बिना बोल नहीं सकता और भाव के बिना ग्रहण भी नहीं कर सकता, सुन भी नहीं सकता। जीवन में अगर भाव न हो, अभाव की माला दिन-रात जपता रहे तो जी भी नहीं सकेगा प्राणी और जियेगा भी तो बुरे हाल जियेगा! इसीलिये उस "तत् त्वम् असि" को और जरा सरल ढंग से सादगी के साथ लाने के लिये उसने क्या रास्ता बतलाया – कहा – देख भई, मैं आया "तत् त्वम् असि" का भाव तुझको दिया लेकिन तुम सम्भल कर चलना, कहीं अभिमान न आ जाये। मैंने कहा – मुझे क्या करना होगा? उसने कहा अभिमान जल्दी से गिरता नहीं है मनुष्य का, मैंने तेरा अभिमान चूर्ण किया है। अभिमान चूर्ण क्यों किया? इसलिये किया कि मैं चूरमे वाला हूँ। (बाबा को चूरमा बहुत पसन्द था)। अब आप कहेंगे वह चूरमे वाला कैसे? तो कहता है कि मैं चुर-मुर कर देता हूँ निरर्थक विचारों का।

एक बार किसी भक्त ने पूछा बाबाजी आप किससे खुश हैं? कहा देखो भई – दुनिया की और कोई चीज मुझे खुश नहीं कर सकती लेकिन चूरमें से मैं कभी धापता नहीं। इसीलिये आज भी उनके भक्त अन्य कोई चीज न बनाकर आषाढ़ सुदी बारस के दिन चूरमा जरुर बनाते हैं क्योंकि वह उनकी निरर्थक बातों को चुरमुर (सफा) कर देता है। चूरमा तो रमा देता है खुद के हृदय में भगवान का भाव और निरर्थक भाव को तो चुरमुर करके फेंक देता है। तो ये बारस वाला है बड़ा विचित्र। सब कुछ छोड़ा, सूखी

पत्तियाँ चबायी, अब ये भला चूरमा में क्या रह गया? भई रहस्य है। महापुरुषों की बातों को हम लोग क्या समझें? न जाने उस चूरमे में क्या बात थी, क्या रहस्य था।

आज भी हमारा बलदेव चूरमे का देवता है। बड़ा विनोदी, बड़ा हँसमुख। जो भी भक्त आता उसे देख कर प्रसन्न होनेवाला। एक बार मैंने देखा कि एक भक्त जिसके सन्तान का कोई हिसाब नहीं था। सन्तान हुयी फिर शादी भी हो गयी। शादी के बाद लड़का आया वधु को लेकर। बाबा का शरीर तो नहीं था उस वक्त लेकिन माताजी (माँ बनासा) का शरीर था। तो जरा-सी मिठाई सर पर लेकर वह बाबा की भावना रखनेवाली, बाबा की भक्त वह माँ बनासा नाचने लगीं। मैं पागल हुआ बैठा हुआ था कि ये जरा-सी सुहाली और जरा से पेठे पर ये कैसे नाच रहीं हैं। मैंने पूछा माताजी क्या बात है? कहने लगी - नहीं, आप समझें नहीं। आज मेरी ईच्छा फलवती हुयी। क्यों भई – यह तो गृहस्थियों जैसा कर्म है। किसी को सन्तान नहीं थी सन्तान हो गई, शादी हो गई तो यह तो गृहस्थियों जैसा ही तो कर्म है। नहीं साधारण मनुष्य तो बस गृहस्थी इतना-ही समझता है लेकिन भगवान का भक्त, क्या समझता है? वह यह समझता है कि भगवान ने मेरे मुँह से बात कहलवाई और आज वह पूरी कर दी उस पूर्ण करने वाले भगवान ने। यदि एक मानसिक, सांसारिक अभिलाषा की पूर्त्ति करता है वह भगवान, तो वह अवश्य ही एक दिन इस जीवत्व भाव को दूर कर के पूर्ण करने की क्षमता रखने वाला भगवान, जरुर एक दिन पूर्ण करेगा।

यदि आपको कोई बात पूछनी हो, समझनी हो उसका भी एक अलग रास्ता है। आप समय तय करके मेरे निवास स्थान पर आ सकते हैं। और जो

अपने भीतर की बात होती है वह पागलपन में मैं कुछ कह जाऊँ – जब तक आपकी वह अवस्था न बने तब तक मेरा पागलपन मेरे तक है, मेरी बातें मेरे तक हैं लेकिन ध्यान रखियेगा, कहीं ऐसा न हो कि कुछ हवा लग जाये, कल मैंने किसी से कह दिया था कि साधू के पास मत जाओ, सन्त के पास मत जाओ। कहा क्यों ? कहीं ऐसा न हो कि सन्त अपना भाव देकर तुम्हें पागल बना दे। अपना पागल नहीं बल्कि उसका (भगवान) पागल कर दे। दूर रहो उनसे। दूर रहकर माला जपो। कहीं नजदीक गये नहीं, कहीं उसने अपना भाव फेंका नहीं कि फिर आप सम्भल नहीं सकेंगे। नहीं बाबा, दूर रहकर नमस्कार करो। नजदीक आये नहीं कि कहीं उसने अपना रंग चढ़ाया नहीं, और रंग चढ़ाया तो घर वाले कहेंगे कि हमारे यहाँ तो काम धाम कुछ नहीं करतीं। यहाँ बात कुछ और है। कोई कहता होगा कि यह तो गृहस्थ है, कैसा होगा, क्या होगा। अरे भई गृहस्थ है तो यह तो आनन्द है। घर में ही रहेंगे और भगवान के होकर के रहेंगे। जिनको घर छोड़कर के कोई दूसरा घर बसाना है तो बसाये।

वह (बाबा) बोलकर गया कि भई, हम तो पहले ही साधु थे। तुम लोग साधु नहीं बनना घर में ही रहना और अपने भाव में रहना। अच्छा होगा कि ये सुनी हुयी बातें आप किसी को न लगे, अगर लग गई तो आप मेरी तरह पागल हो जायेंगे। इसीलिये यदि पागलपन से बचना हो तो भई सुनते जाओ, किन्तु भूल करके ग्रहण मत कर लेना। अगर आप ग्रहण करेंगे तो ग्रहण लग जायेगा। याद रखो यदि आपने ग्रहण किया नहीं तो ग्रहण लगा नहीं और नहीं तो ऐसा ग्रहण लगेगा कि शरीर तो छूट जाये लेकिन भाव नहीं जाये। यह एक ऐसा रंग है।

जो कहकर गया (बाबा) वह तो दिगम्बर था और मैं पागल हूँ। दुनिया की तरफ से जो पागल होगा वह भगवान की तरफ लगेगा। दुनिया के लिये पागल नहीं, दुनिया से पागल। दुनिया के लिये पागल तो सब-ही हैं लेकिन दुनिया से अलग होकर के किसी और के लिये पागल होना है। तभी तो कुछ विशेषता है। बस आज इतना-ही।

❋ ❋ ❋